The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत की सुरक्षा में सीमा एवं सीमान्त का महत्व

डॉ० विरेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

बाउण्डरीज, फ्रन्टियर्स, सीमावर्ती प्रान्त, सीमा क्षेत्र, जलीय सीमा, भूगोलिक विशेषता

ABSTRACT

सीमा व सीमान्त दोनों शब्द अंग्रेजी भाषा के दो अलग अलग शब्द Boundaries तथा Frontiers के अनुवाद है। अंग्रेजी के शब्द बाउण्डरीज तथा फ्रन्टियर्स आपस में पर्यायवाची शब्द नही है। फ्रन्टियर्स का अर्थ है सीमावर्ती प्रान्त अथवा सीमा क्षेत्र जबकि बाउण्डरीज एक निश्चित रेखा है, जिसे सामान्यतः अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति प्राप्त होती है। भारत की स्थल सीमायें अपनें सात पड़ौसी देशों से मिलकर बनती है तथा भारत की जलीय सीमा भी सात पड़ोसी देशों से बनती हैं, जिनमें तीन देश बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा म्यांमार के साथ जलीय एवं स्थलीय दोनों सीमायें बनती है तथा शेष श्रीलंका, इण्डोनेशिया, मालदीव और थाईलैण्ड हैं। देश का पूर्व–पश्चिम विस्तार 2933 किलोमीटर तथा उत्तर–दक्षिण विस्तार 3214 किमी0 हैं। भारत की कुल थलीय सीमा 15,200 किलोमीटर के लगभग है तथा समुद्री सीमा (द्वीपों सहित) 7516.6 किमी0 लम्बी हैं, जो उसे एक प्रमुख भूगोलिक विशेषता प्रदान करती है। उत्तर में, भारत की सीमा चीन, नेपाल और भूटान के साथ जुड़ी हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान और पूर्व में बांग्लादेश और म्यांमार के साथ इसकी सीमाएं मिलती हैं। दक्षिण में, भारत की

सीमाऐं हिन्द महासागर से मिलती है। इस प्रकार, भारत का भौगोलिक विस्तार और सीमाऐं उसे एक रणनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बनाती हैं। भारत की सीमाओं के प्रबंधन और सुरक्षा के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई गई हैं। सीमा सुरक्षा बलों का गठन, आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग, और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग इन रणनीतियों का हिस्सा हैं। इन उपायों के बावजूद, सीमाओं पर शांति और स्थिरता बनाए रखना एक सतत चुनौती है, जिसे निरंतर निगरानी और सुधार की आवश्यकता होती है।

प्रस्तावना –

भारत एक विशाल देश है। भारत की स्थल सीमायें अपनें सात पड़ौसी देशों से मिलकर बनती है। आज के सुरक्षा परिदृश्य में एक राष्ट्र की सुरक्षा उसकी सीमाओं की सुरक्षा पर निर्भर करती है तथा भारत की सीमाओं की सुरक्षा के लिये सीमाओं पर और सीमान्त क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के सुरक्षा बलों को तैनात किया गया है।

सीमा दो राष्ट्रों के बीच की वह रेखा है। जो दो राष्ट्रों को अलग– अलग पहचान दिलाती है। दो पृथक राष्ट्रों की भौगोंलिक सीमांकन का एक रूप है जो मानव निर्मित अथवा प्राकृतिक रूप में स्वीकार्य हो। अथवा सीमा दो देशों के मध्य एक रेखा है जो दो राष्ट्रों को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, वैज्ञानिक तथा वैचारिक दृष्टि से अलग करती है। सीमायें दो प्रकार की होती है। प्राकृतिक सीमायें व कृत्रिम सीमायें। प्राकृतिक सीमायें वह होती है जिनका निर्धारण सागरों, नदियों, पर्वतों, झीलों इत्यादि से होता है तथा कृत्रिम सीमायें वह होती है जिनका निर्माण मानव स्वयं करता है, जहां कोई प्राकृतिक अवरोध नही होता है।

सीमान्त का अर्थ सीमा के निर्धारित रूप से है। जो कि अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों द्वारा निर्धारित किया गया है। उस प्रान्तीय भौगोलिक विभाजन की रेखा को सीमा कहते है जबकि सीमा की अपेक्षा सीमान्त क्षेत्र अधिक विस्तृत होता है, जैसे प्रान्तों के पारस्परिक भौगोलिक विभाजन के लिए सीमा शब्द का ही प्रयोग किया जा सकता है। भारत –पाकिस्तान अथवा भारत–चीन को विभक्त करने वाले भौगोलिक स्थल या प्रदेश को सीमान्त कहते है। इन भौगोलिक स्थलों अथवा सीमान्त प्रदेशों का अध्ययन अथवा ज्ञान किये बिना देश की सुरक्षा समस्याओं का समाधान नही किया जा सकता। इस संबंध में सरदार के. एम. पन्निकर ने कहा है कि जब किसी देश की नीतियों का लक्ष्य राष्ट्रीय सुरक्षा होता है , तो उसका निर्धारण मुख्य रुप से भौगोलिक तत्वों से हुआ करता है। [2]

सीमा व सीमान्त दोनों शब्द अंग्रेजी भाषा के दो अलग अलग शब्द Boundaries तथा Frontiers के अनुवाद है। अंग्रेजी के शब्द बाउण्डरीज तथा फ्रन्टियर्स आपस में पर्यायवाची शब्द नही है। फ्रन्टियर्स का अर्थ है सीमावर्ती प्रान्त अथवा सीमा क्षेत्र जबकि बाउण्डरीज एक निश्चित रेखा है, जिसे सामान्यतः अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति प्राप्त होती है।

"सीमान्त किसी भी राज्य की परिधि में भिन्न भिन्न चौड़ाई वाले क्षेत्र होते है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा वह रेखा होती है, जो उस क्षेत्र के अन्दर सुनिश्चित की जाती है"। [3]

"सीमा रेखा उस क्षेत्र को निश्चित करती है, जिसमें राज्यों के आन्तरिक प्रबन्ध का विकास होता है। जिस पर भिन्न भिन्न राज्य एक–दूसरे के सम्पर्क में आते है। इस प्रकार यह एक भौगोलिक वस्तु न होकर राजनीतिक वस्तु है।" वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सीमान्त का निर्धारण दो राष्ट्रों के समझौतों के फलस्वरुप ही होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि सीमान्त भूतल के ही भाग होते हैं इसलिए उसकी व्याख्या प्राकृतिक रुप में ही की जाती है। लेकिन सीमायें कृत्रिम भी होती है क्योंकि उनका चयन, निर्माण तथा प्रथक्करण भू–भाग के भौतिक गुणों के अनुरुप मानव द्वारा किया जाता है। इनके निर्धारण में भौगोलिक तथ्यों को ध्यान में रखना बिल्कुल सही है। इस सम्बन्ध में लार्ड़ कर्जन का कथन एकदम सही प्रतीत होता हैं कि "सीमायें कृपाण की धार के समान होती हैं जिस पर राष्ट्रों की शान्ति अथवा युद्ध तथा जीवन अथवा मृत्यु की डोर लटकती रहती हैं।" [4] सधारणतः सभी पडोंसी राष्ट्र भिन्न होते है उनमें कुछ मित्र और कुछ शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने वाले होते हैं। आर्थिक प्रतिस्पर्धा अथवा सैनिक आतंक के कारण युद्ध होते रहते हैं। मुख्यतः दो राष्ट्रों के मध्य युद्ध के कारण अनिर्णित होते हैं। इन क्षेत्रों को दोनों ही राष्ट्र अपने–अपने भू–भाग में मिलाना चाहतें हैं। अन्तर्राष्ट्रीय तनावों में सीमाओं का प्रश्न प्राकृतिक और मानवीय तत्वों के बीच का मूल तत्व है। लेकिन यह मानवीय तत्व के अधिक निकट है, क्योंकि राज्यों की सीमायें मनुष्य ही तय करता हैं। अधिकांशतः यह एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रों में प्राकृतिक वातावरण, जलवायु की विभिन्नता के कारण बनती हैं। यह विभिन्नता एक क्षेत्र को पार करने में पृथक–पृथक नही होती। किन्तु धीरे–धीरे वह अलग होती जाती है। यदा–कदा तो पड़ोसी राज्यों का भूगोल, व्यवसाय, संस्कृति में इतनी समानता होती है कि सीमा पार करने के उपरान्त भी यह अनुभव नही होता है कि हम दूसरे क्षेत्र में हैं।

सीमान्त और सीमा की अवधारणा को दूसरे रुप में भी समझा जा सकता हैं। सीमा के इस या उस पार संबंधित राज्यों को अपने क्षेत्रों में नियम, अधिकार और सत्ता सीमित करने के अधिकार प्राप्त होते हैं। अपने–अपने क्षेत्रों के प्रशासन, टैक्स, सुरक्षा और व्यापार का दायित्व भी संबंधित राज्य का होता है। अतः इन क्षेत्रों तथा रेखाओं का स्पष्ट होना बहुत आवश्यक हैं। अन्यथा लड़ाई–झगड़े की सम्भावनायें निरन्तर बनी रहती है। वर्तमान परिदृश्य में अन्तर्राष्ट्रीय दशायें भी सीमाओं को प्रभावित करती है। इस बारे में ईशाह बॉबमैन का कहना है कि समय के अनुसार राष्ट्रीय अथवा सीमान्त क्षेत्र संकट उत्पन्न कर देते हैं, अस्थाई तथा स्थाई रहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय दशायें सीमाओं को प्रभावित

करती है। प्रादेसिक हित और आकांक्षायें सीमाओं का मेरुदण्ड नही होती किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की दार्शनिकता भी उनको प्रभावित करती है। [5]

भारत की भौगोलिक स्थिति – भारत एक विशाल देश है इसकी आकृति चतुष्कोणीय है। यह एक प्रायद्वीप है, जिसके तीनों ओर समुद्र हैं। भारत की स्थिति महान विषवुत रेखा से उत्तर में 8^0 4^I से 37^0 6^I उत्तरी अक्षांश और 68^0 7^I से 97^0 25^I पूर्वी देशान्तर के मध्य है। देश का पूर्व–पश्चिम विस्तार 2933 किलोमीटर तथा उत्तर–दक्षिण विस्तार 3214 किमी0 हैं। देश की स्थलीय सीमा 15200 किमी0 तथा समुद्री सीमा (द्वीपों सहित) 7516.6 किमी0 लम्बी हैं। [6] भारत का क्षेत्रफल 3287263 वर्ग किलोमीटर हैं। जो विश्व क्षेत्रफल का लगभग 2.4 प्रतिशत हैं। भूमध्य रेखा भारत के दक्षिण में तथा कर्क रेखा भारत के मध्य से होकर गुजरती है। भारत की स्थलीय सीमायें बांग्लादेश, चीन, पाकिस्तान, नेपाल भूटान, म्यांमार तथा अफगानिस्तान से मिलती हैं। भारत की स्थलीय सीमा भारत के 15 (Fifteen) राज्यों और दो (Two) केन्द्रशासित प्रदेशों से मिलकर बनती है जो निम्न सारणी में प्रदर्शित किये गये हैं–

क्रम	देश का नाम	सीमा की लम्बाई	राज्यों की संख्या	भारतीय राज्यों के नाम
1	बांग्लादेश	4096	5	पश्चिमी बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
2	चीन	3488	5	हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, लददाख केन्द्र शासित
3	पाकिस्तान	3323	5	पंजाब, गुजरात, राजस्थान, जम्मू–कश्मीर व लददाख केन्द्र शासित
4	नेपाल	1751	5	उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, सिक्किम
5	म्यांमार	1643	4	अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
6	भूटान	699	4	सिक्किम, पश्चिमी बंगाल, असम, अरूणाचल प्रदेश
7	अफगानिस्तान	106	1	लददाख (POK.)

भारत की जलीय सीमा भी सात पड़ोसी देशों से बनती हैं, जिनमें तीन देश बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा म्यांमार के साथ जलीय एवं स्थलीय दोनों सीमायें बनती है। तथा शेष श्रीलंका, इण्डोनेशिया, मालदीव और थाईलैण्ड हैं। भारत की जलीय सीमा भारत के नौ राज्यों तथा चार केन्द्रशासित प्रदेशों से मिलकर बनती हैं। जो निम्न है– गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, केरल, ओडिसा, कर्नाकट, पश्चिमी बंगाल, गोवा, अण्डमान निकोबार, लक्ष्यद्वीव, पांडिचेरी तथा दमन द्वीप। भारत की जलीय सीमा की सुरक्षार्थ भारतीय नौ सेना उत्तरदायी है और उसकी सहायतार्थ

भारतीय तटरक्षक बल शान्तिकाल में सुरक्षा व निगरानी का कार्य बड़ी ही गहनता व सजगता के साथ निर्वहन कर रही हैं।

भारत की सीमा सुरक्षा – कोई राष्ट्र अपनी स्वत्रंत्रता, अखण्डता एवं प्रभुसत्ता की रक्षा हेतु अपनी सीमाओं की सुरक्षा करना उसका पहला दायित्व होता है। जिसे वह किसी भी स्तर से पूरा करने का प्रयास करता हैं। इस संबंध में वाल्टर लिपमैन महोदय का कहना सही प्रतीत होता है कि किसी राष्ट्र सुरक्षा तभी तक समझी जा सकती है जब तक कि उसे युद्ध निवारण हेतु अपने मार्मिक हितों व मूल्यों का बलिदान नहीं करना पड़ता और यदि उसे युद्ध की चुनौति दी जाय तो वह युद्ध के द्वारा उन्हें बनाये रखने में सक्षम हो। [7]

इस सन्दर्भ में देखा जाय तो भारत ने अपनी सीमाओं की सुरक्षार्थ एक सुदृढ़, गतिशील, प्रभावी, विश्वसनीय सुरक्षा तंत्र विकसित किया हैं, जिसमें भारत निरंतर प्रगतिशील बना हुआ हैं। भारत की सीमाओं की सुरक्षार्थ विभिन्न सैन्य बल अपने अदम्य साहस, कर्तव्यनिष्ठा, गौरवशाली इतिहास व मानवीय सूझ–बूझ के साथ अपने कार्यों का निर्वहन कर रहे हैं। किन्तु फिर भी विशेष रूप से भारत–पाक सीमा पर कभी–कभी अप्रिय घटनाओं के घटित होने के समाचार प्राप्त होते रहते हैं।

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर तैनात सुरक्षा बल –

1	भारत – बांग्लादेश	सीमा सुरक्षा बल
2	भारत – चीन	इण्ड़ो–तिब्बत बॉर्डर फोर्स, स्पेशल फ्रांटियर फोर्स
3	भारत – पाकिस्तान	सीमा सुरक्षा बल
4	भारत – नेपाल	सशस्त्र सीमा बल
5	भारत – म्यांमार	असम राइफल्स और भारतीय सेना
6	भारत – भूटान	सशस्त्र सीमा बल

भारत एक विस्तृत सीमा अपने पड़ोसी देशों के साथ साझा करता है जिसमें प्रत्येक राष्ट्र के साथ पृथक–पृथक भौगोलिक परिवेश, विलक्षण भू–विन्यास, असमान जनांकिकीय स्वरूप तथा प्राकृतिक व मानव निर्मित विभिन्न समस्याओं के साथ एक अनुपम धरोहर हैं। भारत–पाकिस्तान सीमा राजस्थान की भीषण गर्म जलवायु से होती हुई जम्मू–कश्मीर में सियाचिन की माइन्स 30 डिग्री सेन्टीग्रेट वाली ठंडी वादियों से बनी हैं। भारत–चीन सीमा भी अपने पर्वतीय परिवेश के कारण विभिन्न विपरीत परिस्थितियॉ पैदा करती है। भारत–बांग्लादेश सीमा पर बहने वाली नदियॉ निरंतर अपने किनारे बदलती रहती हैं। भारत–म्यांमार सीमा भी प्राकृतिक वनस्पतियों, झाड़–झाखण्ड़ों व घने जंगलों के कारण विषम परिस्थितियॉ बनी रहती हैं। सीमाओं का यह विविध भौगोलिक परिवेश इन सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा व अन्य प्रशासनिक सेवाओं को क्रियान्वित करने में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

भारत–बांग्लादेश सीमा – सन 1947 ई0 में भारत को तीन भागों में विभाजित किया गया, एक भाग हिन्दुस्तान तथा दो भाग पाकिस्तान को दिये गये जिन्हें पश्चिमी पाकिस्तान व पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना गया। 16 दिसम्बर सन 1971 ई0 को विश्व मानचित्र पर बांग्लादेश नामक राष्ट्र का उदय हुआ जिसे पूर्व में पूर्वी पाकिस्तान कहा जाता था। भारत–बांग्लादेश सीमा का निर्धारण सन 1947 ई0 में ही सर रेडक्लिफ द्वारा किया गया था। इसलिये दोनों देशों के मध्य विभाजक रेखा को रेडक्लिफ रेखा के नाम से जाना जाता है। बांग्लादेश के साथ भारत की सर्वाधिक लम्बी सीमा रेखा हैं, जिसकी लम्बाई 4096.70 किमी0 हैं। भारत के पॉच राज्यों पश्चिमी बंगाल (2216.70 km.), असम (263 km.), मेघालय (443 km.), त्रिपुरा (856 km.) एवं मिजोरम (318 km.) के साथ बांग्लादेश की सीमा मिलती हैं [8]। बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष में भारत द्वारा की गयी सहायता व समर्थन के कारण प्रारम्भ से ही बांग्लादेश के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध होने के बावजूद विभिन्न सीमा संबंधी समस्याऐं बनी हुई है जैसे – अवैध घुसपैठ की समस्या, तस्करी की समस्या, नदी जल बँटवारे की समस्या, अंतर्वेश इन्कलेव की समस्या तथा चीन फैक्टर (चैक–बुक डिप्लोमेसी)। अवैध घुसपैठ की समस्या बांग्ला मुक्ति संघर्ष के समय से बनी हुई है, जब लाखों की संख्या में अवैध प्रवासी भारत के विभिन्न सीमावर्ती राज्यों में आकर बस गये। इन अवैध घुसपैठियों के कारण देश की वाहय सुरक्षा, आन्तरिक सुरक्षा पर प्रत्यक्ष रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हैं। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की जनांकीकी संरचना व संसाधनों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हैं। भारत–बांग्लादेश के मध्य लगभग 50 से अधिक नदियाँ साझा है जिनमें तीस्ता नदी जल बँटवारे की समस्या बनी हुई हैं। भारत–बांग्लादेश सीमा पर विभिन्न अन्तर्वेश स्थित हैं। भारत के अन्तर्वेशों की संख्या 106 हैं और बांग्लादेश के 92 अन्तर्वेश भारतीय क्षेत्र में स्थित हैं। अन्तर्वेशों के कारण सीमा पर विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होती रहती हैं।

भारत–चीन सीमा – भारत और चीन के मध्य प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों का उल्लेख मिलता है वर्तमान में भारत चीन लगभग 3488 किलोमीटर लंबी सीमा रेखा साझा करते हैं यह सीमा रेखा मैकमोहन रेखा के नाम से जानी जाती है। जिसका निर्धारण सन 1914 ई0 को ब्रिटिश भारत की ओर से सर हेनरी मैकमोहन आर्थर तथा तिब्बत और चीन के प्रतिनिधियों के मध्य शिमला में एक समझौते के द्वारा किया गया था। [9] हिमालय की ऊंची चोटी को सीमा मानते हुए मानचित्र पर एक लाल रेखा खींच दी गई। भारत के चार राज्य और एक केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर लद्दाख 1597 किलोमीटर, हिमाचल प्रदेश 200 किलोमीटर, उत्तराखंड 345 किलोमीटर, सिक्किम 220 किलोमीटर, तथा अरुणाचल प्रदेश 1126 किलोमीटर चीन की सीमा से मिलते हैं। भारत चीन सीमा तीन सेक्टर में विभाजित होती है पूर्वी सेक्टर अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम मध्य सेक्टर उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश तथा पश्चिमी सेक्टर लद्दाख। सन 1949 ईस्वीं में चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। भारत द्वारा गैर साम्यवादी राष्ट्र होते हुए भी चीन को मान्यता प्रदान की। सन 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण कर अपना अधिकार कर लिया गया। इससे भारत की एक विस्तृत सीमा रेखा चीन के साथ साझा हो गई। चीन सीमा पर समय–समय पर विभिन्न विवाद उत्पन्न करता रहता है चीन अरुणाचल प्रदेश में मैक मोहन रेखा और अक्साई चिन पर भारतीय दावे

को नहीं मानता है। सीमा पर यथास्थिति बनाए रखने के लिए वास्तविक नियंत्रण रेखा का निर्धारण किया गया। भारत चीन सीमा पर इण्डों तिब्बत सीमा पुलिस बल सन 1962 ई0 से सीमा एवं सीमा क्षेत्र की निगरानी का कार्य कर रही है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत द्वारा 173 सीमा सुरक्षा चौकियां स्थापित की गई है। पैंगोंग झील विवाद, गलवान घाटी विवाद, डोकलाम विवाद, तवांग विवाद, नाथुला दर्रा, नदी जल विवाद, बेल्ट एंड रोड पहल संबंधी विवाद, चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा विवाद आदि चीन के साथ भारत की ऐसी विषम सीमा परिस्थितियों जिनमें छुट–पुट सैनिक कार्यवाहियों के साथ 20 अक्टूबर 1962 को चीन द्वारा भारत पर अप्रत्याशित आक्रमण कर उसके भूभाग पर अवैध कब्जा करना सीमा को अति संवेदनशील बनाता है। लद्दाख में भारत चीन सीमा पर सन 1956 में चीन द्वारा अक्साई चिन क्षेत्र में सड़क का निर्माण कर तिब्बत को अपने सिंजियांग प्रांत से जोड़ दिया। सन 1963 में पाकिस्तान द्वारा 5180 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र चीन को अवैध रूप से उपहार में दे दिया गया। सन 1967 में चीन द्वारा काराकोरम राजमार्ग का निर्माण कर इस क्षेत्र में अपनी सैन्य स्थिति सुदृढ़ ही नहीं की वल्कि स्थाई सैनिक बकरों व अड्डों की स्थापना की है। जबकि इसके विपरीत भारत ने कोई स्थाई सैन्य ढांचा विकसित नहीं किया। लद्दाख की विषम प्राकृतिक परिस्थितियॉ जहां वर्ष में अधिकतम समय तापमान माइनस 20 डिग्री सेंटीग्रेड से लेकर माइनस 35 डिग्री सेंटीग्रेड तक बना रहता है। यह मौसम सैनिक जीवन के लिए स्वयं एक चुनौतीपूर्ण व खतरे से भरा होता है।

भारत–पाकिस्तान सीमा – भारत पाकिस्तान सीमा का निर्धारण भारत की स्वाधीनता के साथ ही हुआ। सीमा निर्धारण की जिम्मेदारी सर सिरिफ फॉल्स रेडक्लिफ को दी गई इस कारण भारत पाकिस्तान के मध्य सीमा को रेडक्लिफ रेखा के नाम से जाना जाता है। रेडक्लिफ रेखा की आधिकारिक घोषणा 17 अगस्त 1947 को की गई थी। भारत पाकिस्तान विभाजन के कारण आधुनिक इतिहास में सबसे बड़ी संख्या में मानव विस्थापित हुए जिसमें लगभग 14 मिलियन लोग थे। भारत पाकिस्तान सीमा रेखा की लंबाई 3323 किलोमीटर है। सीमा रेखा की संवेदनशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि जिसके निर्धारण के समय वहां की जनता को इतनी बड़ी मानव त्रासदी का सामना करना पड़ा। भारत विभाजन के पश्चात भारत व पाकिस्तान के मध्य चल रहे संघर्ष, संकट व सहयोग जैसे बिंदुओं ने दोनों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, रक्षा व आर्थिक तंत्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। यद्यपि सन 1947 से पूर्व भारत के ही अंग रह चुके पाकिस्तान (द लैण्ड ऑफ प्योर) के राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक तंत्रों में काफी समानता है, यद्यपि विभाजन के बाद उत्पन्न कई द्विपक्षीय मसलों ने भारत व पाकिस्तान को एक–दूसरे का परंपरागत शत्रु बना दिया है।[10] वर्तमान में पाकिस्तान के साथ भारत के तीन राज्य एवं दो केंद्र शासित प्रदेशों की सीमा मिलती है। जिनमें– पंजाब, राजस्थान, गुजरात, जम्मू–कश्मीर एवं लद्दाख है। बॉर्डर पोल नंबर 1 से 274 तक 553 किलोमीटर की सीमा भारत के पंजाब राज्य से लगती है। बॉर्डर पोल नंबर 274 से 921 तक 1037 किलोमीटर की सीमा राजस्थान राज्य के साथ लगती है। बॉर्डर पोल नंबर 921 से 1175 तक 508 किलोमीटर की सीमा भारत के गुजरात राज्य के साथ मिलती है।[11] जम्मू कश्मीर और लद्दाख के

साथ पाकिस्तान की 1225 किलोमीटर की सीमा रेखा साझा होती है। भारत पाकिस्तान सीमा पर भारत द्वारा लगभग 50000 पोलों पर 150000 तेज रोशनी वाले बल्ब स्थापित किए जाने के कारण रात्रि के समय इसे अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है।[12] भारत पाक सीमा को तीन अलग–अलग भागों में विभाजित किया गया है[13]–

- अंतर्राष्ट्रीय सीमा
- लाइन ऑफ कंट्रोल (नियंत्रण रेखा)
- वास्तविक जमीनी स्थिति रेखा (कार्यरत सीमा)

भारत पाकिस्तान के मध्य सन 1947–48, 1965, 1971 एवं 1999 में तीन युद्ध और एक संघर्ष हो चुका है। इन युद्धों से सीमा की संवेदनशीलता का अनुमान लगाया जा सकता है। भारत में पाक द्वारा प्रायोजित आतंकवाद, आतंकवादियों की अवैध घुसपैठ, मादक द्रव्य पदार्थों की अवैध तस्करी, हथियारों की तस्करी, नदी जल बटवारा विवाद, नकली मुद्रा की तस्करी, जम्मू कश्मीर की जनता को जिहाद के नाम पर और पंजाब की जनता को खालिस्तान के नाम पर भड़काना, अंतरराष्ट्रीय मंचों जैसे– संयुक्त राष्ट्र संघ आदि पर भारत विरोधी प्रचार प्रसार करना आदि भारत पाक सीमा को विश्व की सबसे खतरनाक सीमाओं में से एक माना जाता है।

भारत–म्यांमार सीमा – म्यांमार भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित एक अर्द्ध पर्वतीय राष्ट्र है म्यांमार की भौगोलिक स्थिति 10 डिग्री उत्तरी अक्षांश से 28 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 92 डिग्री पूर्वी देशांतर से 101 डिग्री पूर्वी देशांतर में स्थित है। म्यांमार का क्षेत्रीय विस्तार पूर्व से पश्चिम 936 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण 205 किलोमीटर हैं।[14] भारत और म्यांमार लगभग 1643 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं। सीमा पर भारत के चार राज्य अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड , मिजोरम तथा मणिपुर स्थित है। म्यांमार के साथ भारत स्थल और समुद्र दोनों तरह की सीमा साझा करता है। म्यांमार भारत के लिए राजनीतिक व सामरिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। भारत–चीन–म्यांमार का ट्राई जंक्शन दीफू दर्रा अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर स्थित है। भारत का दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में प्रवेश म्यांमार से होकर जाता है। भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में व्याप्त विप्लव उग्रवाद व अलगाववाद सीमा को जटिल बनता है। यह अलगाववादी सीमा के जंगलों में शरण लेकर भारत के विरुद्ध कार्यवाहियों को अंजाम देते हैं किंतु म्यांमार सरकार कई बार यह कह चुकी है कि हम अपनी भूमि का प्रयोग भारत के विरोध गतिविधियों में नहीं करने देंगे। म्यांमार सीमा क्षेत्र में कुछ उग्रवादी संगठनों एनएससीएन–के के शिविर सक्रिय रहे हैं जिनके विरुद्ध भारत सरकार ने 8 और 9 जून 2015 की रात को सर्जिकल स्ट्राइक कर नष्ट किया। म्यांमार के साथ भारत का कोई सीमा विवाद नहीं है। भारत म्यांमार के मध्य 8 मई 2014 में सीमा सहयोग पर एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। भारत म्यांमार सीमा की रक्षा के लिए ऑपरेशन सनराइज के अंतर्गत दोनों देशों की सेनाओं के समन्वय पर जोर दिया जा रहा है।[15] म्यांमार गोल्डन ट्रेन्गल (स्वर्ण त्रिभुज) का सदस्य है, जो अफीम उत्पादन का केंद्र है, जिस

कारण सीमा पर नशीले पदार्थों की तस्करी की समस्या बनी रहती हैं। म्यांमार के रोहिंग्या मुसलमान की समस्या के कारण सीमा पर अवैध आव्रजन या घुसपैठ की समस्या, चीन धीरे–धीरे म्यांमार में आर्थिक, सैन्य व सामरिक समीकरणों का जाल बनता जा रहा है। चीन अपनी स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स स्त्रातेजी के अंतर्गत म्यांमार के कोको दीप पर नेवल आधार स्थापित किए हैं, जहां चीन की नौसैनिक पनडुब्बियॉ गस्त कर रही है, यहां से भारतीय सीमा क्षेत्र अधिक दूर नहीं है। यह भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय है। भारत म्यांमार सीमा पर असम राइफल्स की लगभग 60 कंपनी तैनात रहती है।

भारत–नेपाल सीमा – नेपाल मध्य हिमालय के दक्षिणी ढलान पर चतुर्दिक भूमि से आवृत्ति देश है। नेपाल की भौगोलिक स्थिति 26° डिग्री 20' मिनट उत्तरी अक्षांश से 30° डिग्री 10' मिनट उत्तरी अक्षांश तथा 80° डिग्री 15' मिनट पूर्वी देशांतर से 88° डिग्री 15' मिनट पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। नेपाल का विस्तार पूर्व से पश्चिम लगभग 907.5 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण लगभग 235 किलोमीटर है।[16] भारत नेपाल 1751 किलोमीटर लंबी सीमा रेखा साझा करते हैं जिसमें भारत के पांच राज्य– उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम है। नेपाल की उत्तरी सीमा पर चीन अधिकृत तिब्बत स्थित है। एस सी बोस ने अपनी पुस्तक 'हिमालय का भूगोल' में लिखा है कि "नेपाल एक स्वतंत्र राज्य है और इसकी अंतस्थ स्थिति के कारण इसकी विदेश नीति तथा रक्षा नीति का भारत से गहरा संबंध है।"[17] निश्चित रूप से भारत नेपाल मैत्री ऐतिहासिक है, दोनों देशों के मध्य रोटी– बेटी के संबंध है। भारत नेपाल के मध्य पूर्ण खुली हुई सीमा रेखा पर बसे लोगों को देखकर यह कहना कठिन हो जाता है कि कौन भारतीय है और कौन नेपाली क्योंकि दोनों के ही रहन–सहन, रीति–रिवाज, पर्व–त्यौहार, धर्म और कला संस्कृति में काफी समानताएं हैं। भारत की अखंडता, प्रभुसत्ता तथा सामरिक स्थिति के लिए नेपाल की अखंडता, प्रभुसत्ता व स्वतंत्रता अतिआवश्यक है। इसके महत्व को समझते हुए भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सुरक्षा परिपेक्ष्य में कहा था कि "यद्यपि भारत और नेपाल के मध्य कोई सैनिक समझौता नहीं किया गया है, तो भी यदि नेपाल पर किसी भी ओर से आक्रमण किया गया तो भारत द्वारा सहन नहीं किया जाएगा। नेपाल पर संभावित कोई भी आक्रमण भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है।"[18] भारत के उत्तरी पूर्वी सीमांत पर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण चुम्बी घाटी स्थित है। माओ ने जिसे तिब्बत की हथेली बताकर लद्दाख, नेपाल, सिक्किम, भूटान तथा अरुणाचल को हथेली की उंगलियां कहा था। चुम्बी घाटी भारत के चिकन नेक (सिलीगुड़ी घाटी) से मात्र 50 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। सिलीगुड़ी गलियारा भारत के साथ–साथ नेपाल, म्यांमार तथा भूटान के लिए भी सामरिक महत्व रखता है। भारत नेपाल सीमा पर भारत की स्थानीय पुलिस के साथ सशस्त्र सीमा बल तथा नेपाल की सशस्त्र पुलिस बल कार्यरत है। दोनों बल संयुक्त रूप से गश्त करते हैं।[19] भारत नेपाल के मध्य कुछ क्षेत्रों को लेकर सीमा विवाद बने हुए हैं जिनमें कालापानी क्षेत्र विवाद, भारत–नेपाल–चीन ट्राई–जंक्शन है, जो 35 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र है दूसरा विवाद सुस्ता क्षेत्र 20 वर्ग किलोमीटर का है। भारत नेपाल के मध्य खुली सीमा होने के कारण पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी और घुसपैठियें

ही है माद्रक द्रव्य पदार्थ, जाली करंसी, छोटे हथियारों की अवैध तस्करी तथा अन्य देशों से भी अवैध आव्रजन नेपाल के रास्ते से होता रहता है। भारत इन क्रियाओं को नियंत्रित करने हेतु सशस्त्र सीमा बल तैनात किए हुए हैं। इन जवानों को आधुनिक हथियारों और उपकरणों से सुसज्जित करना होगा। नेपाल समय–समय पर चीन के प्रभाव में जाकर, भारत के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करने लगता है। भारत को सजग रहने की आवश्यकता है।

भारत–भूटान सीमा – भूटान हिमालय के पूर्वी भाग में पर्वतों के मध्य घाटियों में बस एक भू–बद्ध देश है भूटान का भौगोलिक विस्तार 26 डिग्री 45 मिनट उत्तरी अक्षांश से 28 डिग्री 20 मिनट उत्तरी अक्षांश तक तथा 89 डिग्री 45 मिनट पूर्वी देशांतर से 93 डिग्री पूर्वी देशांतर है । भूटान की पूर्व से पश्चिम लंबाई 305 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 145 किलोमीटर है। इसके उत्तर में चीन अधिकृत तिब्बत तथा दक्षिण पूर्व एवं पश्चिम में भारत के साथ सीमा लगती है। भूटान पिछड़ा वह छोटा होने के बावजूद भी अपनी भू राजनीतिक व भू समरिकी से भारत व चीन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। भारत भूटान 699 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं। भारत भूटान सीमा पर भारत के चार राज्य सिक्किम 32 किलोमीटर, पश्चिम बंगाल 183 किलोमीटर, असम 267 किलोमीटर तथा अरुणाचल प्रदेश 217 किलोमीटर स्थित है। इस सीमा को प्राकृतिक और भौगोलिक सीमा कहा जाता है, जिसमें ऊंचाइयों, नदियों और खाइयों का विशेष महत्व है। इतिहास की दृष्टि से, यह सीमा दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है। सीमा की सुरक्षा व निगरानी का कार्य सशस्त्र सीमा बल करता है। सीमा पर एस एस बी ने 132 सीमा चौकियॉ स्वीकृत की है, जिनमें वर्तमान में 131 सीमा चौकियां स्थापित है। इस सीमा के पास विभिन्न स्थलों पर सीमा सुरक्षा बलों की तैनाती होती है। सीमा पर विविध सीमा सुरक्षा कार्यक्रम चलाए जाते हैं, ताकि सीमा को सुरक्षित रखा जा सके और किसी भी अनाधिकृत पारिति को रोका जा सके। राजनीतिक दृष्टि से भारत और भूटान के बीच सशक्त संबंध है, दोनों देश एक दूसरे के साथ व्यापार, विकास और सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग करते हैं। भारत भूटान का प्रमुख विकास साथी है, जो अपने पड़ोसी देश की समृद्धि और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। भारत का सिलीगुड़ी गलियारा (200 किलोमीटर लम्बा वह 60 किलोमीटर चौड़ा चिकन नेक) बेहद अहम है क्योंकि यह भूटान से लगता है, भूटान पर कोई भी खतरा सीधा चिकन नेक को प्रभावित करेगा। सन 1958 में भारतीय प्रधानमंत्री पंडित नेहरू भूटान की यात्रा पर गए और भूटान को सभी प्रकार से सहयोग करने की घोषणा की थी। [20] पंडित नेहरू ने भारतीय संसद में कहा था कि कोई भी हमला जो भूटान पर होगा उसे भारत के विरुद्ध हमला माना जाएगा। भूटान में विशेषकर भूटान व चीन के बीच विवादित सीमा पर चीन की बढ़ती उपस्थिति ने भारत की चिंताएं बढ़ा दी है। भारत भूटान का सर्वाधिक निकट सहयोगी रहा है तथा भारत ने भूटान की संप्रभुता एवं सुरक्षा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भूटान में चीन का बढ़ता आर्थिक व सैन्य प्रभाव भारत के रणनीतिक हितों के लिए चुनौती उत्पन्न करता है भारत भूटान सीमा पर अधिकतर शांतिपूर्ण माहौल रहता है। सन 2017 में चीन के साथ डोकलाम विवाद, भारत–चीन–भूटान ट्राई–जंक्शन पर था,

जिसमें चीनी घुसपैठ का विरोध करने के लिए भारतीय सैनिकों को अपने क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति दी।

भारत–अफगानिस्तान सीमा – भारत अफगानिस्तान सीमा, जो पाक अधिकृत कश्मीर क्षेत्र में स्थित है, भारत के लिए विशेष महत्व रखती है। यह सीमा भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी किनारे पर स्थित है और भारत के राज्य जम्मू कश्मीर से जुड़ी है। सीमा इतिहास, संघर्ष और रणनीतिक उतार चढ़ाव का केंद्र रही है। भारत अफगानिस्तान लगभग 106 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं।[21] अफगानिस्तान एशिया के चौराहे पर स्थित होने के कारण रणनीतिक महत्त्व रखता है, क्योंकि यह दक्षिण एशिया को मध्य एशिया और मध्य एशिया को पश्चिम एशिया से जोड़ता है। भारत का संपर्क ईरान, अजरबैजान, तुर्कमेकिस्तान तथा उज्बेकिस्तान के साथ अफगानिस्तान के माध्यम से होता है। इसलिये अफगानिस्तान भारत के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। गिलगित बाल्टिस्तान इस क्षेत्र में स्थित हैं, इसी के पास सियाचिन ग्लेशियर हैं जो विश्व का सबसे ऊँचा युद्वस्थल हैं। विश्व की महाशक्तियॉ इस पर अधिकार करना चाहती हैं क्योंकि यहॉ से सम्पूर्ण दक्षिण एशिया, पश्चिम एशिया, चीन तथा रूसी राष्ट्र कुल के दशों पर निगरानी व नियंत्रण आसान हो जाता हैं। अफगानिस्तान भू–रणनीतिक व भू–राजनीतिक दृष्टि से भी भारत के लिये विशेष महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत और मध्य एशिया के मध्य स्थित है जो भारत के लिए व्यापार का भी मार्ग प्रदान करता है। यह क्षेत्र चीन, पाकिस्तान, ईरान और मध्य एशिया के देशों के साथ भी सीमा साझा करता है।

निष्कर्ष –

भारत की सीमाऐं, जो न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत संवेदनशील हैं, देश की सुरक्षा और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत की सीमाओं की विविधता, चुनौतियों और अवसरों का अध्ययन कर यह समझने का प्रयास किया गया हैं कि ये सीमाएं देश के भविष्य को कैसे प्रभावित कर सकती हैं। भारत की कुल थलीय सीमा 15,200 किलोमीटर के लगभग है, जो उसे एक प्रमुख भूगोलिक विशेषता प्रदान करती है। उत्तर में, भारत की सीमा चीन, नेपाल और भूटान के साथ जुड़ी हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान और पूर्व में बांग्लादेश और म्यांमार के साथ इसकी सीमाएं मिलती हैं। दक्षिण में, भारत की सीमाऐं हिन्द महासागर से मिलती है। इस प्रकार, भारत का भौगोलिक विस्तार और सीमाऐं उसे एक रणनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बनाती हैं।

भारत की सीमाओं के प्रबंधन और सुरक्षा के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई गई हैं। सीमा सुरक्षा बलों का गठन, आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग, और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग इन रणनीतियों का हिस्सा हैं। इन उपायों के बावजूद, सीमाओं पर शांति और स्थिरता बनाए रखना एक सतत चुनौती है, जिसे निरंतर निगरानी और सुधार की आवश्यकता होती है। भारत की सीमाओं की जटिलता और विविधता उसकी भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न होती है। इन सीमाओं पर स्थिरता और शांति को बनाए रखने के लिए सतर्कता, कूटनीति, और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। भारत

की सीमाऐं न केवल उसकी सुरक्षा और सामरिक स्थिति को प्रभावित करती हैं, बल्कि देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए, इन सीमाओं के मुद्दों को समझना और समाधान की दिशा में कदम उठाना भारत के राष्ट्रीय हितों के लिए अनिवार्य है।

सन्दर्भ–

1 डॉ कुमार सतीश 'सैन्य भूगोल' दी रीडर्स पैराडाईज, नई दिल्ली पेज – 21

2 आर के चटर्जी, इण्डियाज लैण्ड बॉर्डर, 1978 पेज 34।

3 Pearcy and Associates, World Political Geography page 88

4 सिंह डॉ बी. पी. 'राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा ' चन्द्र प्रकाश एण्ड ब्रादर्स, हापुड़ भाग–2 पेज – 05

5 वर्मा दीनानाथ, भारत और विश्व राजनीति पेज – 66

6 https://en.wikipedia.org

7 सिंह लल्लन जी, 'राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा' प्रकाश बुक डिपो, बरेली 2003 पेज – 04

8 सिंह डॉ बी पी. पेज – 99

9 श्रीवास्तव डॉ जे एम, सिंह डॉ बी. पी. 'भारत का रक्षा संगठन, भारतीय युद्वकला' पेज – 22

10 पाण्डेय रामसूरत 'राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' प्रकाश बुक डिपो, बरेली 2016 पेज –301

11 सिंह डॉ बी. पी. पेज – 07

12 India- Pakistan borderlands at night NASA. 23 September 2015 (https://hi.m.wikipedia.org)

13 Kumar Dr. Sanjay 'India's border management with Pakistan – An overview' EPRA International Journal of economic and business review. Volume -6 3 march 2018 page 03

14 सिंह डॉ बी. पी. पेज – 129

15 16 June 2019 https://www.hindustantimes.com

16 सिंह डॉ बी. पी. पेज – 88

17 सिंह डॉ. अशोक कुमार, 'आधुनिक स्त्रातेजिक विचारधारा तथा राष्ट्रीय सुरक्षा' प्रकाश बुक डिपो, बरेली 2014 पेज – 368

18 सिंह डॉ बी. पी. पेज – 89

19 'द हिमालयन टाइम्स ' 7 जनवरी 2019

20 सिंह डॉ बी. पी. पेज – 105

21 https://en.wikipedia.org